शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

मध्यप्रदेश से सोयाबीन निर्यात की संभावनाएं

श्रीमती संगीता दुबे (शोधार्थी)
डॉ. गिरीशचन्द्र गुप्ता (प्राचार्य)
शासकीय महाविद्यालय, सुसनेर
डॉ.आर.बी. गुप्ता (प्राध्यापक)
श्री अटल बिहारी वाजपेयी शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय
इंदौर, मध्यप्रदेश, भारत

शोध संक्षेप

भारत कृषिप्रधान देश है। आज भी देश की बहुसंख्यक जनसंख्या कृषि पर आधारित है। मध्यप्रदेश देश का हृदयस्थल है। यहाँ पर देश के कुल उत्पादन का अस्सी फीसदी सोयाबीन उत्पादित होता है। यह तिलहन फसल है। अत्यधिक प्रोटीन और कार्बोहाईड्रेट होने से यह उपयोगी खाद्य पदार्थ है। इसका महत्व व्यापारिक फसल के रूप में है। मध्यप्रदेश इस फसल के निर्यातक के तौर पर उभर रहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में सोयाबीन निर्यात की संभावनाओं पर विचार किया गया है।

प्रस्तावना

भारत के विश्व के देशों और बड़े व्यापारिक समूहों के साथ संबंध हैं। जिसमें पश्चिमी यूरोप, पूर्वी यूरोप पूर्ववर्ती सोवियत संघ (रूस) और एशिया, ओसीनिया, अफ्रीका, उत्तरी अमेरीका और लेटिन अमेरिका आते हैं। 1950-51 में भारत का कुल विदेश व्यापार 1214 करोड़ था तब से यह समय-समय पर मंदी के साथ लगातार वृद्धि करने का साक्षी है। भारत की व्यापार संवृद्धि का विश्व व्यापार बढ़ोतरी के साथ एक मजबूत सह संबंध है। यह विश्व व्यापार संवृद्धि की तुलना में ऊंचा रहा है।

कृषि में सोयाबीन मध्यप्रदेश की मुख्य फसल है। यह दलहन के बजाय तिलहन की फसल मानी जाती है। सोयाबीन मानव पोषण एवं स्वास्थ के लिए एक बहुत उपयोगी खाद्य पदार्थ है। सोयाबीन एक महत्वपूर्ण खाद्य स्रोत है। इसके मुख्य घटक प्रोटीन, कार्बोहाईड्रेट और वसा होते हैं। भारत के निर्यात को मोटे तौर पर चार वर्गो में विभक्त किया जाता है।

1 कृषि और संबंधित उत्पाद
2 अयस्क और खनिज से संबंधित
3 निर्मित वस्तुओं से संबंधित
4 खनिज ईधन और लुब्रिकेन्ट्स

सोयाबीन निर्यात की चुनौती और संभावनाएं

सोयाबीन का महत्व एक व्यापारिक फसल के रूप में बहुत ज्यादा है। जिससे इसकी संभावनाएँ देश के लिए हर दृष्टिकोण से प्रबल है। आज हम तुलनात्मक दृष्टि से अध्ययन करें तो अन्य प्रदेशों की तुलना में मध्यप्रदेश सोयाबीन उत्पादन में अग्रणी प्रदेश है। आज मध्यप्रदेश एक महत्वपूर्ण निर्यातक प्रदेश के रूप में उभर रहा है। प्रदेश में निर्यात की बहुत-सी संभावनाएं विद्यमान हैं। जरूरत है सही मार्गदर्शन की।

प्रदेश में प्राकृतिक सम्पदाओं का भंडार है, जरूरत है सिर्फ उचित दोहन की।

जब हम निर्यात संवर्धन का लक्ष्य लेकर चलते हैं तो प्रमुखत: दो बातें आती हैं प्रथम यह कि अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भारत के योगदान का प्रतिशत कितना है और दूसरा यह कि अन्य छोटे राष्ट्रों की अपेक्षा इस क्षेत्र में हमारा कद क्या है। साथ ही यह भी ध्यान रखना चाहिए कि भारत से किन वस्तुओं का कितना निर्यात होता है और कौन-कौन सी जगह पर उसका सर्वाधिक मार्केट है।

भारत में सोयाबीन का सर्वाधिक उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है, इसलिए प्रदेश में इसकी संभावनाएं ज्यादा हैं। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा स्थापित म.प्र. निर्यात निगम का लगभग सौ करोड़ से अधिक करोबार रहा, परन्तु निर्यात संर्वधन के क्षेत्र में इस निगम की भूमिका निराशाजनक रही। इस निगम का अब लघु उद्योग निगम में विलय कर दिया गया।

मध्यप्रदेश के इन्दौर जिले एवं उसके आसपास के क्षेत्रों से निर्यात के प्रति व्यापारिक वर्ग का उत्साह देखा जा सकता है। ज्यादा से ज्यादा लोग इस क्षेत्र में आना चाहते हैं।

मध्यप्रदेश की वाणिज्यक राजधानी इन्दौर व्यापारियों व औद्योगिक साहूकारों के लिए आर्कषण का केन्द्र रहा है। यहाँ मौजूद अर्थसूत्र व विदेशी मुद्रा विनिमय की अपेक्षाकृत संभावनाएं है। म.प्र. में सबसे अधिक निर्यात की संभावनाएं इन्दौर संभाग में है। इन्दौर राष्ट्रीय राजमार्ग पर दिल्ली-मुबंई के बीच में महत्वपूर्ण परिवहन टर्मिनल स्टेशन है तथा हवाई एवं रेलमार्ग की सुविधाओं से भी जुड़ा है। इसलिए प्रदेश से निर्यात को बढ़ावा देने के लिये समय-समय पर विभिन्न आयोजनों की आवश्यकताएँ हैं। इसके लिये उन्हें निर्यात के संबंध में आवश्यक जानकारियाँ होना चाहिये। जिससे निर्यात यथार्थ में संभव हो सके। यह सही समय पर सही तरीके से प्रादेशिक स्तर पर उद्यमियों को लाभ पहुंचा सकता है।

इन्दौर स्थित संगठन सोयाबीन प्रोसेसर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया यानी सोपा ने यह जानकारी दी है कि वर्ष 2016-17 के पहले छः महीने अप्रैल से सितम्बर के दौरान सोया खली का निर्यात घटकर 76 हजार टन ही हुआ, जबकि इसके पिछले वर्ष वित्त वर्ष की समान अवधि में इसका निर्यात 2 लाख 2 हजार टन का रहा।

चालू तेल वर्ष 2015-16 (अक्टूबर 15 से सितम्बर 16) में 65 फीसदी की भारी गिरावट दर्ज की गई। इस साल कुल निर्यात 2 लाख 62 हजार टन का ही हुआ। हालाकि पिछले तेल वर्ष की समान अवधि में इसका निर्यात 7 लाख 51 हजार टन हुआ था।

इसका मुख्य कारण अमेरिका, ब्राजील और अर्जेन्टीना जैसे देशों में सोया खली के भाव काफी कम थे। भारतीय सोया खली की माँग विश्व व्यापार में घटी, क्योंकि अन्य देशों की तुलना में भारतीय सोया खली के भाव ज्यादा हैं। सोयाबीन का तेल निकालने के बाद अवशेष उत्पाद को सोया खली कहा जाता है। सोया खली प्रोटीन का बहुत महत्वपूर्ण और बढ़िया स्रोत है। इसमें सोया आटा और सोया बड़ी जैसे खाद्य उत्पाद बनाये जाते हैं। साथ ही पशु आहार और मुर्गियों का दाना भी इससे बनता है।

अक्टूबर 2015 की रिपोर्ट के अनुसार मध्यप्रदेश में सोयाबीन की कीमतों में तेजी थी। सोया खली का निर्यात 40 फीसदी घट गया। नवम्बर 2014 में सोया खली के निर्यात में लगभग 80 फीसदी की गिरावट दर्ज की गयी। सोपा के अनुसार

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

नवंबर में देश में 110804 रुपये सोया खली का निर्यात हुआ, जबकि एक साल पहले इसी अवधि में 519125 टन सोया खली का निर्यात हुआ था। वित्त वर्ष के आंकड़ों के अनुसार अप्रैल 2014 से नवंबर 2014 के बीच 2.37 लाख टन सोया खली का निर्यात हुआ, जबकि पिछले साल की समान अवधि में यह आंकडा 15.90 लाख टन था। इस तरह से देखें तो इसमें तकरीबन 85 फीसदी की गिरावट आई।

वही तेल वर्ष (अक्टूबर 2014 से सितम्बर 2015) के अनुसार इस साल अक्टूबर और नवम्बर का निर्यात 1.40 लाख टन रहा, जबकि पिछले साल समान अवधि में याने) अक्टूबर 2014 से सितंबर 2015) में 1.14 लाख टन का निर्यात हुआ था। इस पैमाने पर गिरावट 80.3 फीसदी रही। जानकारों का कहना है उत्तरी और दक्षिण अमेरिका में सोया खली में बम्पर उत्पादन के कारण अंतर्राष्ट्रीय बाजार में भारतीय सोयाखली के लिये प्रतिस्पर्धा नहीं रही, जिसकी वजह से निर्यात मांग प्रभावित हुई। फिलहाल भारतीय सोयाखली के अंतराष्ट्रीय बाजार में भाव 15 से 20 डालर प्रतिटन हैं। दो दूसरे देशों की तुलना में यह भाव ऊँचे हैं।

ऐसे ही सितम्बर 2016 की इन्दौर एक रिपोर्ट के अनुसार सोयाखली और इससे बने उत्पादों का भारतीय निर्यात अगस्त में करीब 66 प्रतिशत गिरकर 10615 टन रह गया। अगस्त 2015 में देश में इन उत्पादों का निर्यात 31157 टन के स्तर पर था। प्रसंस्करणकर्ताओ के इन्दौर स्थित संगठन सोपा की और से जारी विज्ञाप्ति में यह जानकारी दी गई पूंजी जुटाने के लिये अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में बांड जारी करेगी।

डायल विज्ञाप्ति के मुताबिक मौजूदा वितीय वर्ष में अप्रेल से अगस्त के बीच देश मे सोयाखली और उससे बने उत्पादों के निर्यात का आंकड़ा 63522 टन रहा। यह पिछले वित्तीय वर्ष की समान अवधि में इन पदार्थो के 168.054 टन के निर्यात से 62 प्रतिशत कम है। तेल विपणन वर्ष अक्टूबर 2015 से सितम्बर 2016 में अक्टूबर से अगस्त के बीच देश के सोयाखली और उससे बने उत्पादों के निर्यात में करीब 65 प्रतिशत की गिरावट दर्ज की गयी और यह लगभग 249291 टन रह गया।

दिसम्बर 2016 की रिपोर्ट के अनुसार सोया डी.ओ.सी का निर्यात नवंबर में बढ़ा। नवंबर महीने में सोया डी ओ सी का निर्यात बढ़कर 51805 टन हुआ, जबकि अक्टूबर में इसका निर्यात केवल 3177 टन का हुआ। चालू वित्त वर्ष 2016-17 में पहले आठ महीनों अप्रैल से नवंबर के दौरान सोया डी ओ सी का कुल निर्यात 68470 टन का हो चुका है, जबकि पिछले वित्त वर्ष की समान अवधि में इसका निर्यात 55889 टन का ही हुआ। घरेलू बाजार में इन्दौर में सोया डी ओ सी का भाव 23500 रुपये था। उत्पाद मंडियो में सोयाबीन के भाव 2850 से 2950 रूपये प्रति क्विंटल हैं, जबकि सोयाबीन की दैनिक आवक 3.5 से 4 लाख क्विंटल की रही। इतने उत्पादन के बाद भी निर्यात में कहाँ क्या कमी रही, इसका सरकार को पता लगा कर दूर करने के प्रयास करना चाहिए।

चालू सीजन में सोयाबीन की पैदावार बढ़कर 100 लाख टन होने का अनुमान है, जबकि एसडीए के अनुसार फसल सीजन 2016-17 में भारत में सोयाबीन की पैदावार 115 लाख टन होने का अनुमान है। माना जा रहा है कि घरेलु बाजार में सोयाबीन की उपलब्धता ज्यादा होने के कारण चालू फसल सीजन में सोया डीओसी का निर्यात पिछले दो साल की तुलना से ज्यादा होगा।

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 जुलाई 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

भारतीय बंदरगाह पर सोया डीओसी के भाव नवंबर महीने के घटकर 367 डालर प्रतिटन रहे जबकि अक्टूबर माह में इसके भाव 408 डालर प्रतिटन थे।

निर्यात वृद्धि के उपाय

इन गिरावटों को देखते हुए प्रदेश के दोनों कृषि विश्वविद्यालय के डायरेक्टर रिसर्च और कृषि विभाग के आला अधिकारियों के बीच बैठक हुई, जिसमें ये बाते निकलकर सामने आईं -

1 किसानों में सोयाबीन की फसल के प्रति जागरूक करने की जिम्मेदारी कृषि विश्वविद्यालय को दी है।

2 नई वैरायटी जो मौसम और कम पानी में बेहतर उत्पादन दे तैयार करने को कहा है।

3 इसके लिए वैज्ञानिकों ने तैयारी शुरू कर दी है। सोयाबीन की दो नई वैरायटी रिलीज की गई।

4 हालात को सुधारने के लिये वैज्ञानिक और किसान के बीच कम्युनिकेशन बढ़ाने को कहा है।

5 कृषि विज्ञान केन्द्र की मदद से मौसम के मुताबिक फसल का चक्र सुधारा जायेगा।

जैसे सोयाबीन में 30 डिग्री का तापमान जरूरी होता है, जो औसतन 35 से 38 के बीच रहे। पानी रूक-रूक कर मिलना चाहिये। एक साथ बारिश हुई या कहीं नहीं हुई, बीमारी-पीला ओज़र से पत्ते पीले हुये, उठकर रोग से सफेद रंग के कीड़े पैदा हुये, एरियल ब्लाईट से पत्तियाँ और फल मर गये, इन बातों का ध्यान रखा जायेगा।

नयी वैरायटी

देश में सोयाबीन का 90 फीसदी बीज मध्यप्रदेश देता है। इससे मौसम और कम पानी में होने वाली वैरायटी तैयार की है। अभी और कर रहे हैं। सरकार और आई.सी.ए. के साथ मिलकर सोयाबीन उत्पादन में आ रही कठिनाईयों को दूर किया जा रहा है, जिससे उत्पादन में वृद्धि होगी और निर्यात की संभावनाएँ भी बढेंगी। सोयाबीन की फसल प्रभावित होने से परेशान किसानों को जल्द राहत राशि वितरण करने के लिये शासन ने घोषणा पत्र भरने की अनिवार्यता और आयकरदाता को मुआवजा नहीं देने की शर्त खारिज कर दी है।

निष्कर्ष

नये प्रावधान में अधिकांश किसानों को फसल की नुकसानी के आधार पर राहत राशि मिल सकेगी। मार्च 2017 के अनुसार बंपर पैदावार के बल पर घरेलु बाजार में कीमतों में आई गिरावट के बीच भारत द्वारा इस साल 20 लाख टन से अधिक सोया खली निर्यात किये जाने की संभावना है। देश के प्रमुख वेजीटेबल आयल टुडे एसोसिएशन सालवेंट एक्सट्रैक्टर्स एसोसिएशन ऑफ़ इंडिया (एस.आई.आई.) के अध्यक्ष अतुल चतुर्वेदी ने कहा "पिछले वर्ष सोयाबीन की पैदावार बहुत अच्छी रही, इसका उत्पादन बढ़कर एक करोड़ पंद्रह लाख टन पर पहुंच गया है। उन्होंने कहा कि "सोया खली का निर्यात किया जा रहा है। इस ई.ए.आई. के आंकड़ों के मुताबिक भारत वर्ष 2015-16 में 2,50,775 टन सोयाबीन का निर्यात किया था। वर्ष 2016-17 में भी सोयाबीन के निर्यात की अच्छी संभ्भावनाएं है।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. दिसंबर 2016, रणधीर सिंह राणा
2. Business Bhasker - Hindi Daily
3. एजेंसी
4. अक्टूबर 2015, नईदुनिया, अतुल शुक्ला
5. प्रो. एस.के. राव (डायरेक्टर रिसर्च सीड एक्सपर्ट कृषि वि.वि.)
6. दिसंबर 2015, नईदुनिया आईएसटी
7. by prayukti = prayukti.net, 7 march 2017